एकलव्य

शहंशाह अकबर को कौन सिखाएगा?

एक अवेहि-अबकस कथा

दीपा बलसावर लेखिका और चित्रकार हैं। वे पिछले 20 वर्षों से अवेहि-अबकस प्रोजेक्ट के साथ काम कर रही हैं। कई अन्य शैक्षिक कार्यक्रमों में भी उन्होंने सलाहकार की भूमिका निभाई है।

प्रीति राजवाड़े ग्राफिक डिज़ाइनर हैं और बैंगलोर में रहकर काम करती हैं। एक नन्ही बच्ची की माँ होने के नाते, इन दिनों, बच्चों के लिए शैक्षिक सामग्री की डिज़ाइन की ओर उनका झुकाव बढ़ा है।

अवेहि-अबकस परियोजना विद्यालयीन शिक्षा को अधिक प्रासंगिक व रोचक बनाने के उद्देश्य से शिक्षकों तथा बच्चों के बीच काम करती है।

इस परियोजना द्वारा विकसित सहायक शिक्षण सामग्री किट - *संगति*, का उपयोग मुम्बई महानगर पालिका के नौ सौ से अधिक विद्यालयों में होता है। अवेहि-अबकस ने शिक्षक प्रशिक्षण के लिए एक पाठ्यक्रम भी विकसित किया है। साथ ही यह भारत के सभी बच्चों को समान गुणवत्ता की शिक्षा सुनिश्चित कराने के राष्ट्रव्यापी अभियान का अंग है।

शहंशाह अकबर को कौन सिखाएगा?

एक अवेहि-अबकस कथा

एकलव्य का प्रकाशन

चित्रांकन: **दीपा बलसावर**

डिज़ाइन: **प्रीति राजवाड़े**

शहंशाह अकबर गम्भीर चर्चा में मगन विद्वानों के एक समूह को देख रहे थे। वे बीरबल की ओर मुड़कर बोले, "बीरबल, मैं बहुत चतुर नहीं हूँ। बहुत-सी ऐसी चीज़ें हैं जिनके बारे में मैं नहीं जानता। मैं हर चीज़ को सीखना चाहता हूँ! कल से मेरी पढ़ाई शुरू हो इसका इन्तज़ाम करो।"

अगली सुबह जब शहंशाह ने दरबार में प्रवेश किया तो उनका स्वागत एक विचित्र दृश्य ने किया। दरबार तरह-तरह के लोगों से भरा हुआ था। वहाँ बच्चे और बुज़ुर्ग थे, गृहिणियाँ और धोबिनें थीं, किसान और कचरा बीनने वाले थे, दुकानदार और लिपिक थे, मूर्ख और ज्ञानी थे। और भी न जाने कितनी तरह के लोग थे।

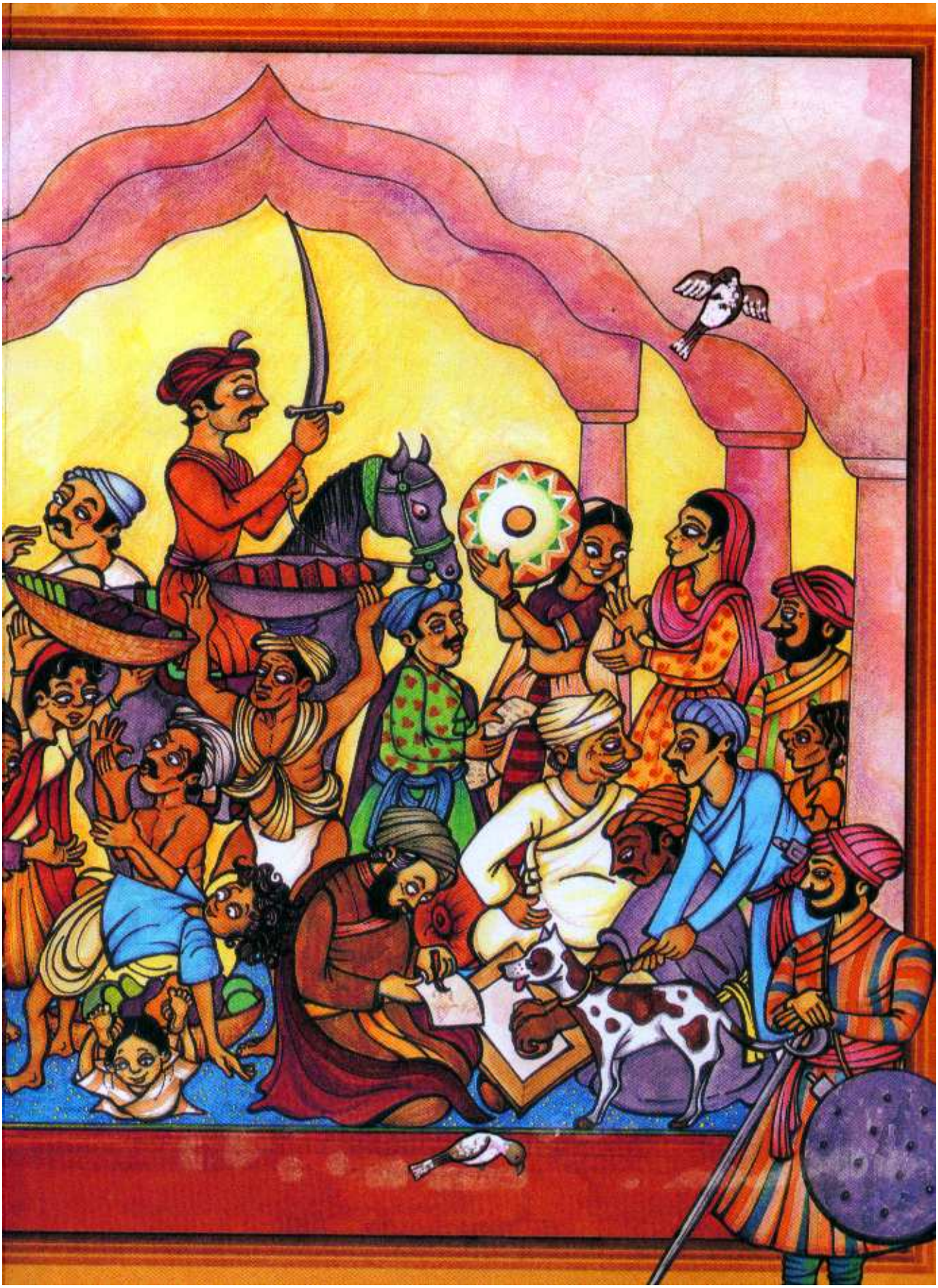

"इस सब का क्या मतलब है?" शहंशाह गरजे। "मैंने तुमसे ऐसे लोगों को लाने के लिए कहा था जो मुझे कुछ सिखा सकें। और तुमने मेरा महल राज्य की आधी जनता से भर दिया? अब जवाब दो!"

"माफी चाहता हूँ, जहाँपनाह, मैंने तो बस आपके आदेशों का पालन किया है," बीरबल ने जवाब दिया। "गुस्ताखी माफ हो, पर क्या जहाँपनाह रेत में घण्टों खेलकर अपना मनोरंजन करना जानते हैं?"

"नहीं! पर उससे क्या?" शहंशाह बौखला गए।

"क्या आप किसी गरीब आदमी की आमदनी में घर चला सकते हैं? या क्या आप जानते हैं कि कपड़ों से दाग कैसे हटाया जाता है?"

"कतई नहीं!" शहंशाह अकबर ने जवाब दिया।

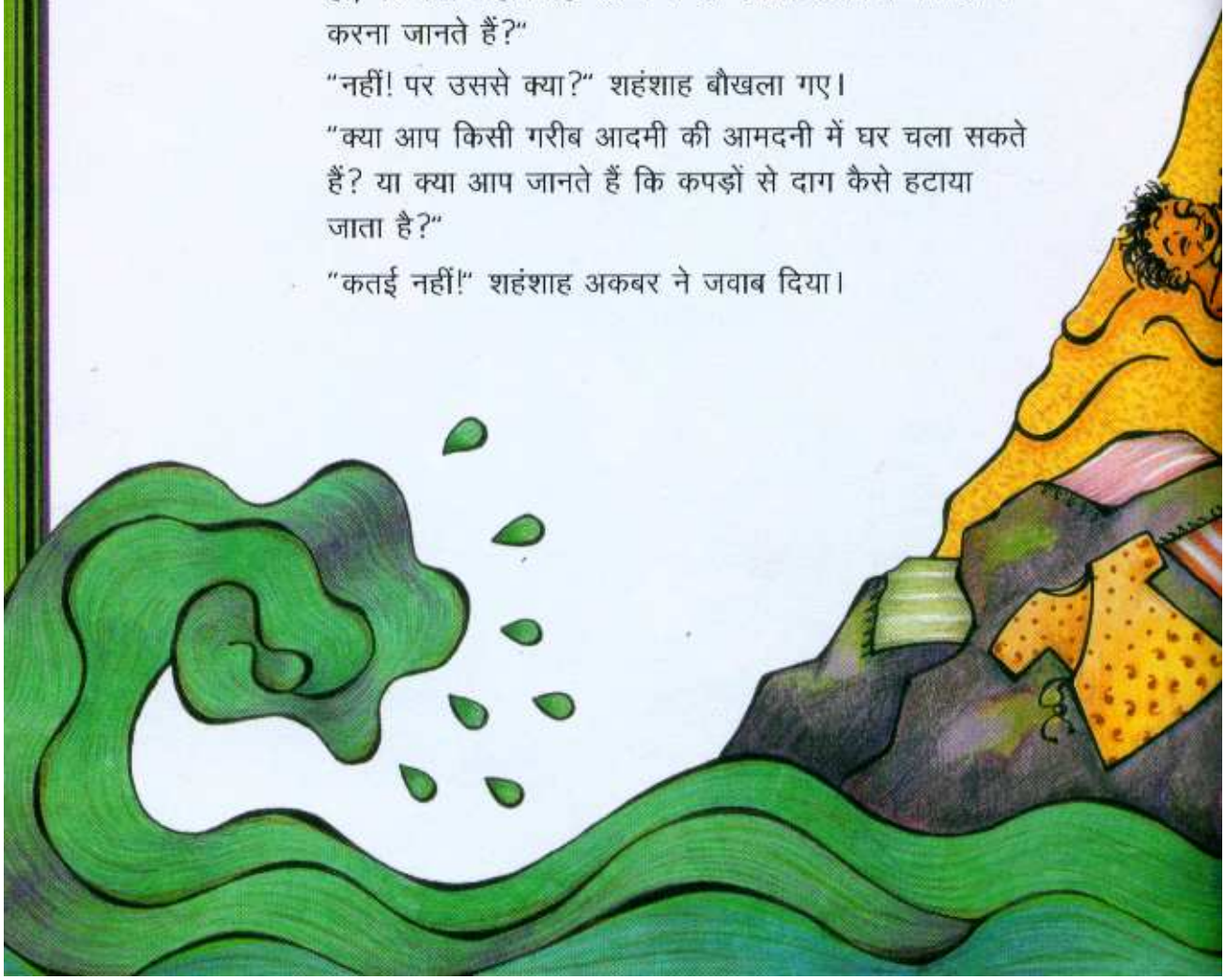

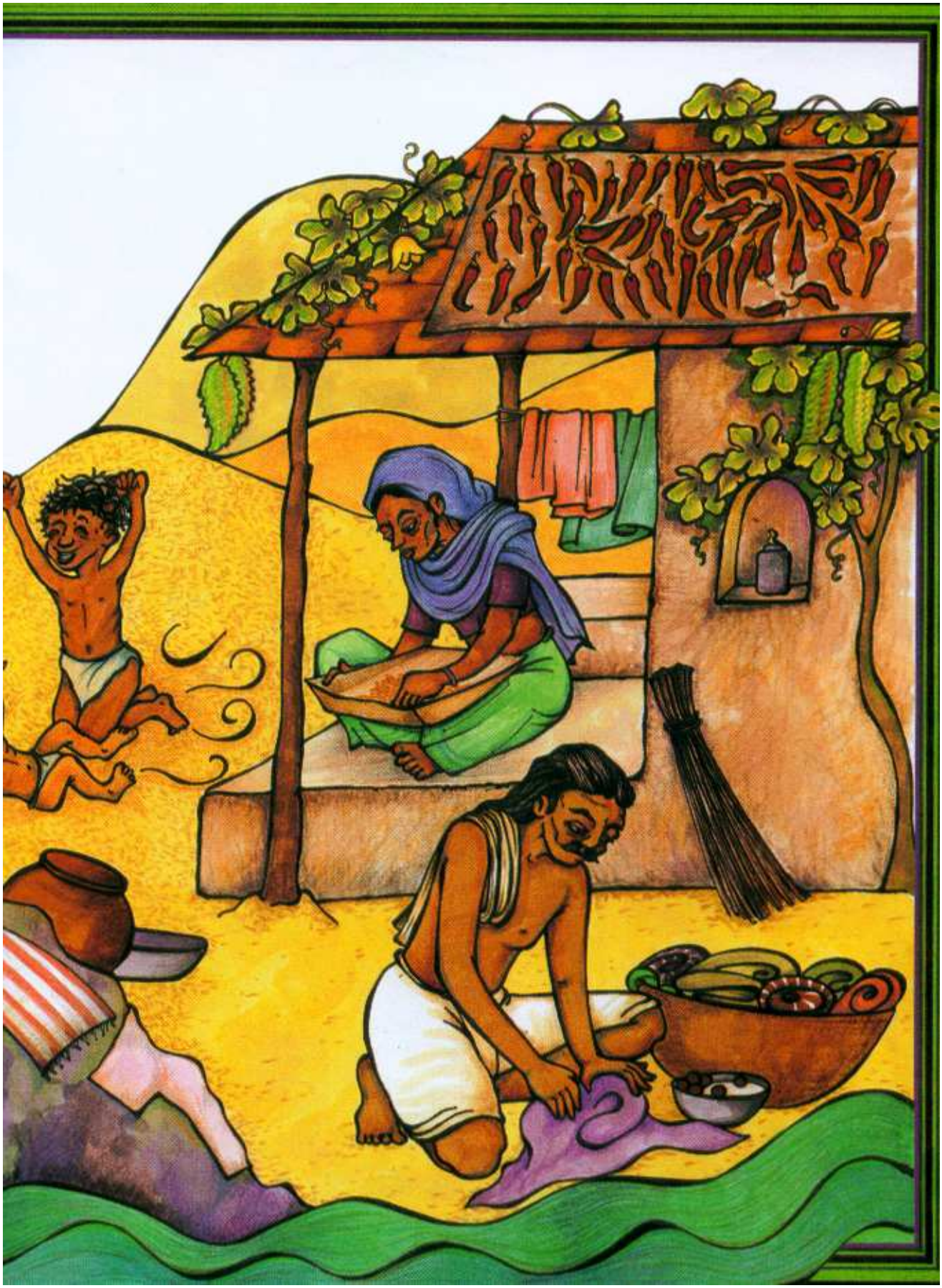

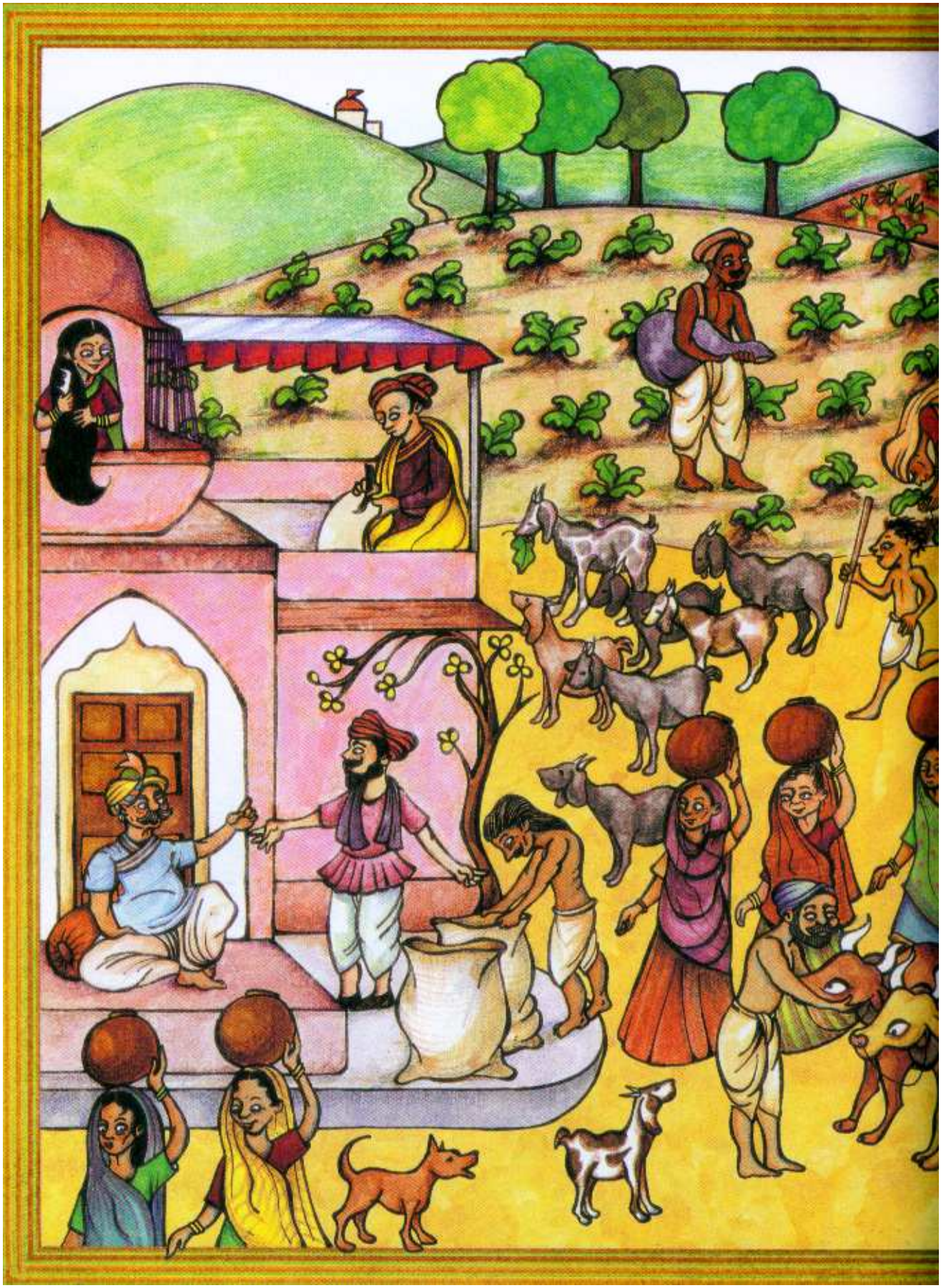

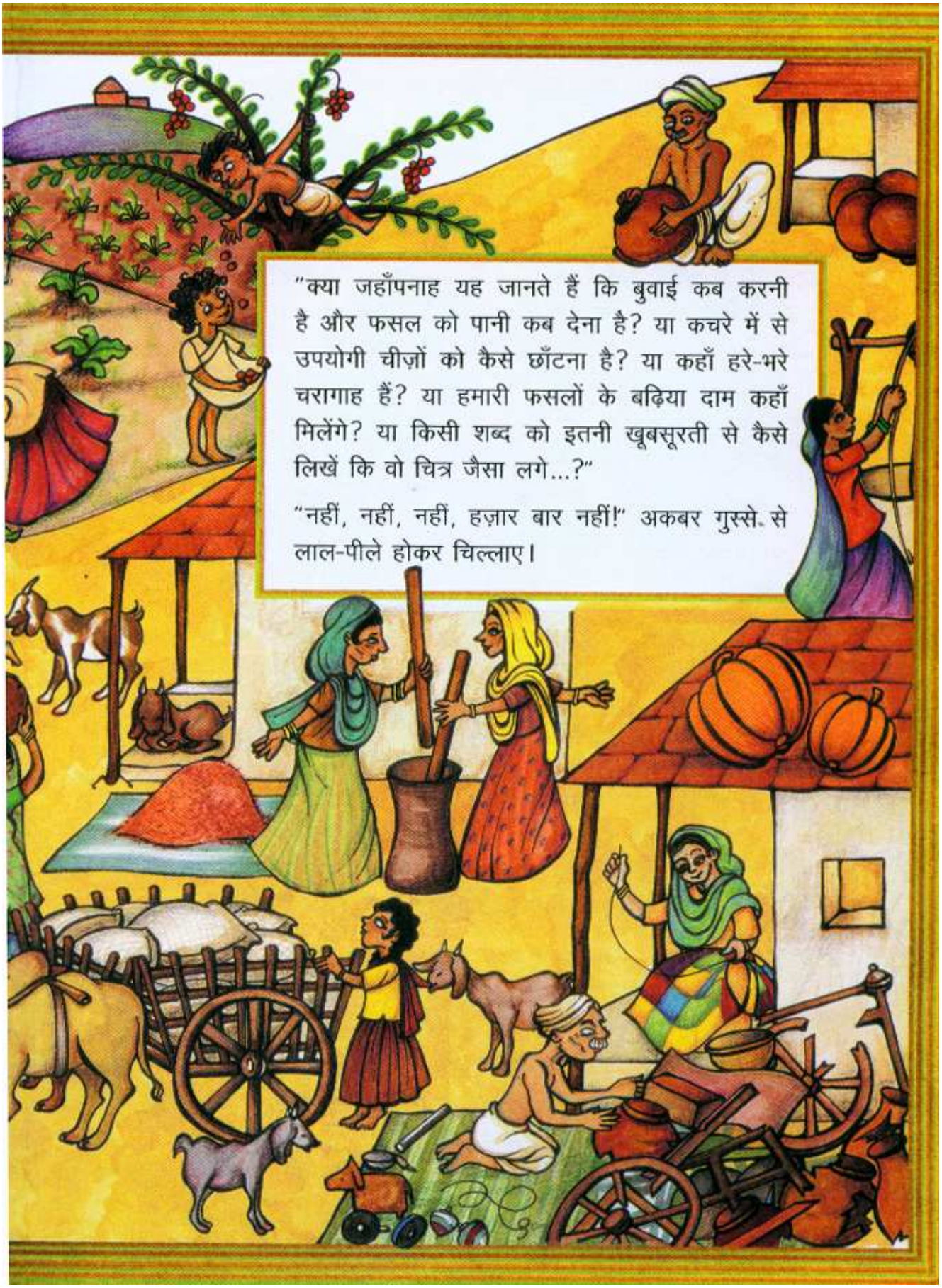

"क्या जहाँपनाह यह जानते हैं कि बुवाई कब करनी है और फसल को पानी कब देना है? या कचरे में से उपयोगी चीज़ों को कैसे छाँटना है? या कहाँ हरे-भरे चरागाह हैं? या हमारी फसलों के बढ़िया दाम कहाँ मिलेंगे? या किसी शब्द को इतनी खूबसूरती से कैसे लिखें कि वो चित्र जैसा लगे...?"

"नहीं, नहीं, नहीं, हज़ार बार नहीं!" अकबर गुस्से से लाल-पीले होकर चिल्लाए।

"तब जहाँपनाह," बीरबल ने शान्ति से कहा, "इस दरबार में मौजूद हर शख्स आपको कुछ न कुछ सिखा सकता है। हरेक ऐसा कुछ जानता है जो दूसरों को नहीं पता है। प्रत्येक के पास कुछ हुनर है, कुछ ज्ञान है, दिल या दिमाग की कोई खासियत है। तो सभी शिक्षक भी हैं और विद्यार्थी भी!"

शहंशाह समझ गए कि बीरबल के कहने का क्या मतलब है। वे हँस दिए, "तब तो तुम भी एक विद्यार्थी हो, बीरबल? मैं तो सोचता था कि तुम्हें कोई कुछ नहीं सिखा सकता!"

"बात इससे उलट है जहाँपनाह, मैं तो हमेशा ही सीखता हूँ," बीरबल ने उत्तर दिया।

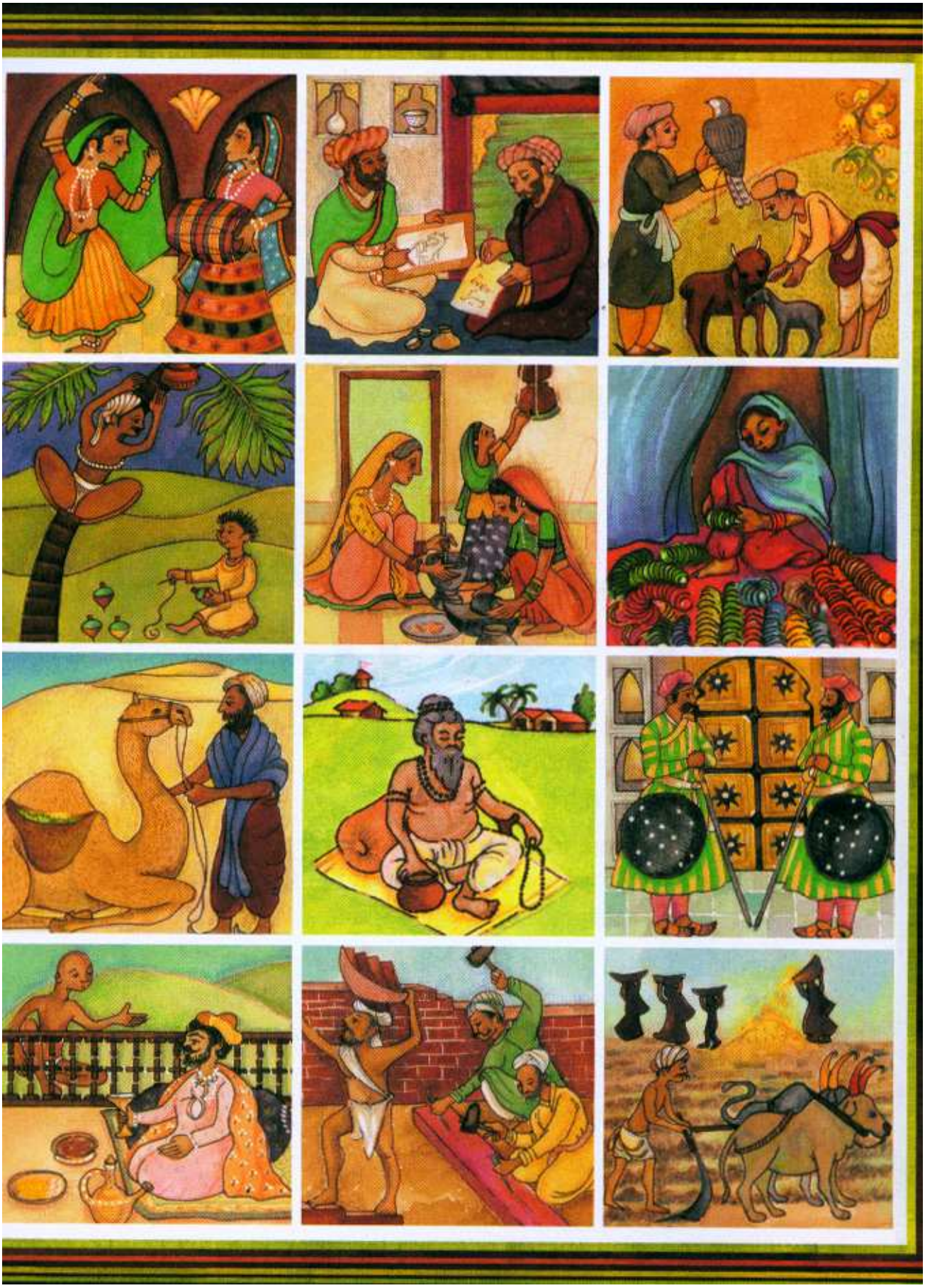

बीरबल भीड़ की ओर बढ़े। एक बूढ़ी महिला का हाथ थामकर उन्हें शहंशाह के सामने ले आए। "जहाँपनाह," उन्होंने कहा, "ये मेरे पहले और श्रेष्ठ गुरुओं में से हैं।"

बूढ़ी महिला ने शहंशाह को सलाम किया और कहा, "हुज़ूर, बुद्धिमान व्यक्ति जानते हैं कि सब कुछ सीख जाना सम्भव नहीं है। लेकिन सब को यह सीखना चाहिए कि अच्छा इन्सान कैसे बना जा सकता है।"

शहंशाह बूढ़ी महिला के शब्दों की सादगी से प्रभावित हुए। वे उनके आगे अदब से झुके और फिर मुड़कर बीरबल से कहा, "तुम सच में भाग्यशाली हो जो तुम्हें इतनी समझदार गुरु मिलीं। क्या तुम मुझे नहीं बताओगे कि ये कौन हैं?"

बीरबल ने उत्तर दिया, "ये हैं....."

क्या तुम सोच सकते हो कि वे कौन थीं?

किसी ऐसे व्यक्ति का चित्र बनाओ या चिपकाओ जिसे तुम अपना बहुत अहम शिक्षक मानते हो।

रंग भरो...

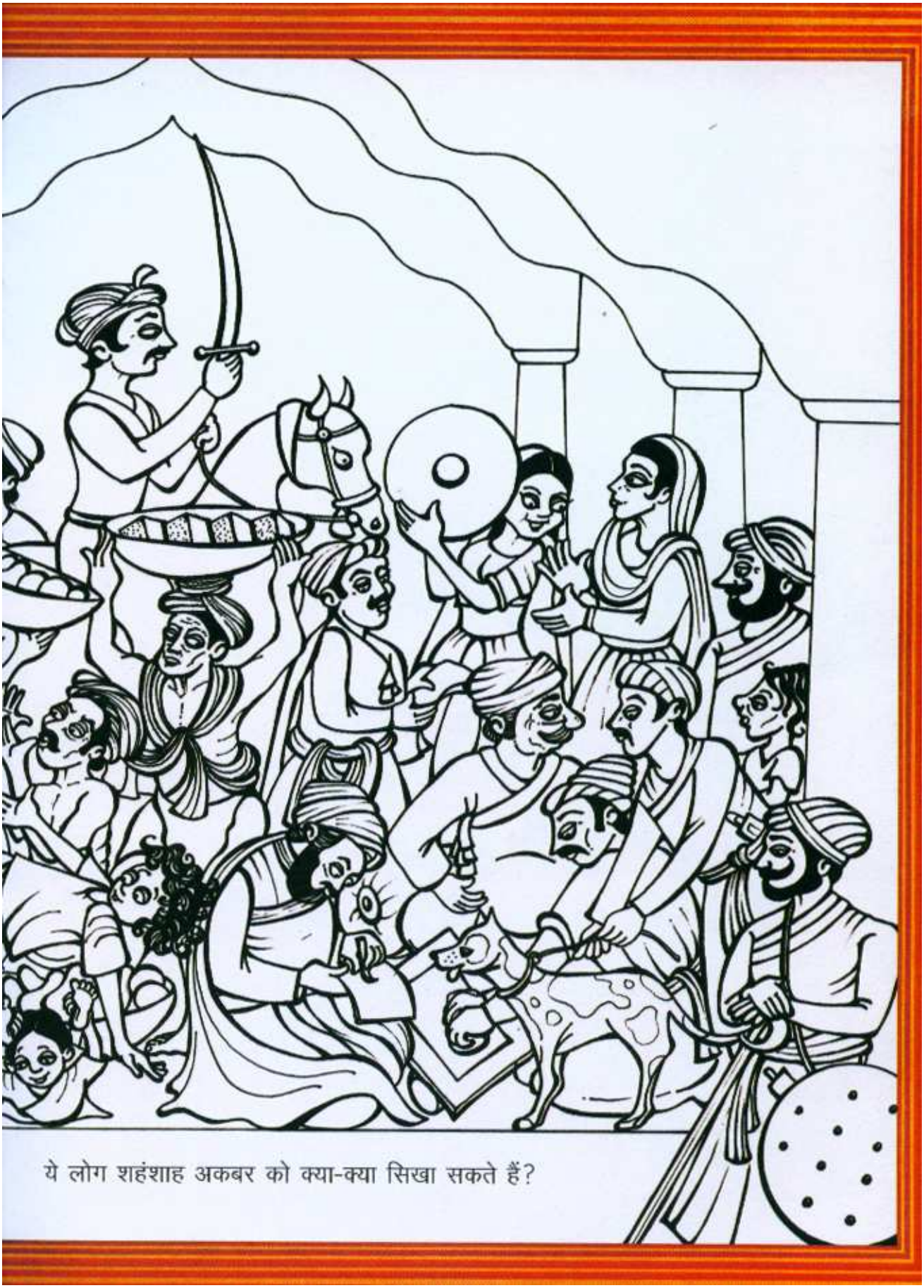

ये लोग शहंशाह अकबर को क्या-क्या सिखा सकते हैं?

शहंशाह अकबर को कौन सिखाएगा?

SHAHANSHAH AKBAR KO KAUN SIKHAYEGA?

एक अवेहि-अबकस कथा

चित्रांकनः दीपा बलसावर

डिज़ाइनः प्रीति राजवाड़े

अँग्रेज़ी से अनुवादः संध्या गाँधी-वकील (अवेहि-अबकस) व दीपाली शुक्ला (एकलव्य)

© अवेहि-अबकस, मुम्बई, www.avehi-abacus.org

जून 2010 / 4000 प्रतियाँ

"पराग इनिशिएटिव" सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित।

कागज़ः 100 gsm मेपलिथो व 300 gsm पेपरबोर्ड (कवर)।

यह किताब अँग्रेज़ी में भी प्रकाशित की गई है।

ISBN: 978-81-89976-72-9

मूल्यः 30.00 रुपए

प्रकाशकः एकलव्य

ई-10, शंकर नगर बीडीए कॉलोनी,

शिवाजी नगर, भोपाल (म. प्र.) 462 016

www.eklavya.in

फोनः (0755) 255 0976, 267 1017 फैक्सः (0755) 255 1108

किताबें मँगवाने के लिएः pitara@eklavya.in

सुझावों के लिएः books@eklavya.in

मुद्रकः आर. के. सिक्युप्रिंट प्रा. लि., भोपाल, फोनः (0755) 268 7589

एकलव्य: एक परिचय

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है। यह पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है। एकलव्य का मुख्य उद्देश्य ऐसी शिक्षा का विकास करना है जो बच्चे व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो; जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो।

पिछले कुछ वर्षों में हमने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में भी किया है। बच्चों की पत्रिका *चकमक* के अलावा *स्रोत* (विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स) तथा *शैक्षणिक संदर्भ* (शैक्षिक पत्रिका) हमारे नियमित प्रकाशन हैं। शिक्षा, जनविज्ञान, बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ, सामग्रियाँ आदि भी एकलव्य ने विकसित एवं प्रकाशित की हैं।

इस किताब की सामग्री एवं सज्जा पर आपके सुझावों का स्वागत है। इससे आगामी किताबों को अधिक आकर्षक, रुचिकर एवं उपयोगी बनाने में हमें मदद मिलेगी।

सम्पर्क: books@eklavya.in
ई-10, शंकर नगर बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल (म. प्र.) 462 016